।। अर्हम् ।।

आचार्य श्रीमहाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर) राज.
दूरभाष नम्बर 01565–224600, 224900 फेक्स
ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

मर्यादा महोत्सव के अन्तिम दिन उमड़ा लोगों का हजूम

संघ नंदनवन है –आचार्य महाप्रज्ञ

आचार्य श्री ने संघ, संघपति और मर्यादाओं में भेंद न होने की बात कही

तुलसीराम चौरड़िया–मीडिया संयोजक

श्रीडूंगरगढ़। 22 जनवरी 10 विश्व ख्याति प्राप्त आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में आयोजित तेरापंथ महाकुंभ मर्यादा महोत्सव के अन्तिम दिन लोगों का हजूम उमड़ पड़ा। श्यामाप्रसाद मुखर्जी स्टेडियम में निर्मित मर्यादा समवसरण चारों तरफ से लोगों से भरा नजर आ रहा था। तेरापंथ अनुशासन की एक झलक पाने को आतुर भारी भीड़ ने जब आचार्य महाप्रज्ञ के पधारने पर वन्दे गुरूवरम् का एक साथ उद्घोष किया तो ऐसा लगा स्वर्ग धरती पर उतर आया है। साधु–साध्वियों की धवल अहिंसक सेना के मध्य विराजमान आचार्य महाप्रज्ञ देवराज इन्द्र की याद दिला रहे थे। हजारों श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि संघ नंदन वन है, जिन्हें क्रोध और अहंकार का आवेश आता है वह दुःखी बन जाते है, जो इन आवेशों पर नियंत्रण कर लेता है, वह संघ में आनंदित रहता है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु द्वारा प्रदत्त मर्यादाओं को अक्षुण्ण रखने की प्रेरणा देते हुए कहा कि आज चाहे परिवार हो, राजनैतिक संगठन हो या अन्य कोई धर्मसंघ हो सबके लिए मर्यादाएं अनुकरणीय है। आचार्य भिक्षु अगर एक नेतृत्व की परम्परा विकसित न करते तो तेरापंथ का जो रूप आज देख रहे हैं, वह नहीं होता। उन्होंने कहा कि संघ, संघपति और मर्यादा इन तीनों में कोई भेद नहीं है। संघ का स्वरूप मर्यादा है, उसका पालन करवाना संघपति का काम है और उन मर्यादाओं का अनुसरण करना संघ का दायित्व है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि तेरापंथ में एक नेतृत्व मान्य है। संविधान के अनुसार आचार्य के आदेश को चुनौति नहीं दी जा सकती। आचार्य अपने उतराधिकारी किस व्यक्ति को बनाएं यह बहुत बड़ी कसौटी है। आचार्य तुलसी ने मुनि नथमल को युवाचार्य महाप्रज्ञ और उसके बाद आचार्य महाप्रज्ञ के तौर पर उत्तरीय ओढाया था। आचार्य श्री इतने करूणावान है। इनकी करूणामय दृष्टि पड़ने पर दुःखी व्यक्ति का दुःख दूर हो जाता है। उन्होंने मर्यादाओं को शासन

का प्राण बताया।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने ''आज मंगल गा रही है सब दिशाएं'' काव्य पंक्तियों के साथ आचार्य महाप्रज्ञ की अभ्यर्थना करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु के पास अनुभव और प्रत्युत्पन्न मति थी। उन्होंने कहा कि समर्पण में जो सुख है वह और कहीं नहीं है। समर्पण ही तेरापंथ की आन–बान–शान है। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। जैन विश्व भारती विश्व विद्यालय की कुलपति समणी मंगल प्रज्ञा ने विश्व विद्यालय को तेरापंथ एवं आचार्य तुलसी की अद्भुत देन बताया। कार्यक्रम में अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल, मुनि अभिजीत, साध्वी कुसुमप्रभा, साध्वी परमयशा, समणी कुसुम प्रज्ञा, समणी सत्य प्रज्ञा, समणी मैत्री प्रज्ञा, समणी प्रणव प्रज्ञा, आचार्य श्रीमहाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति के संरक्षक बनेचंद मालू ने अपने विचार रखें। मुनिगण, साध्वी वृन्द, समणी समुदाय, पारमार्थिक शिक्षण संस्था की बहिनों एवं श्रीडूंगरगढ़ साध्वियों ने गीत के द्वारा अपनी भावनाएं रखी। संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

आचार्य महाप्रज्ञ कर रहे है एक नई टेक्नोलॉजी का निर्माण

मर्यादा महोत्सव के मुख्य कार्यक्रम में प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार ने आचार्य तुलसी के जन्म शताब्दि वर्ष के लिए आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रस्तुत प्रज्ञा जागरण की कार्यशाला आचार्य तुलसी विज्डन वर्ल्ड की रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ एक नई टेक्नोलॉजी का निर्माण कर रहे है। वह टेक्नोलॉजी होगी प्रज्ञा जागरण की। जब प्रज्ञा रूपी आंख खुलती है तभी व्यक्ति अपराध से दूरी बना पाता है। आचार्य महाप्रज्ञ मानव जाति के निर्माण के लिए ऐसे प्रयोगों का इजात कर रहे हैं, जो उसके भीतर प्रज्ञा का जागरण कर सके।

''द बैसिक ऑफ जैनीज्म'' का विमोचन

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा द्वारा लिखित ''द बैसिक ऑफ जैनीज्म'' पुस्तक का लोकार्पण आचार्य महाप्रज्ञ ने किया। जैन धर्म की प्रारम्भिक जानकारी देने वाली इस कृति की लेखिका साध्वी विश्रुतविभा ने पुस्तक की प्रति आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण, साध्वी प्रमुखा कनक प्रभा को भेंट की। समारोह में ही मुनि अक्षय प्रकाश द्वारा सम्पादित आचार्य महाप्रज्ञ की कृति अनेकान्तः सह अस्तित्व का दार्शनिक दृष्टिकोण'' का विमोचन हुआ।

दोनों पुस्तकों का प्रकाशन जैन विश्व भारती के द्वारा किया गया है। आचार्य श्रीमहाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति सरदारशहर के संयोजक सुमति

गोठी ने अक्षय तृतीया महोत्सव पर सभी को आगमन के लिए निमंत्रण देते हुए सभी पदाधिकारियों ने फोल्डर को विमोचन के लिए पूज्यवर को भेंट किया। सुप्रसिद्ध गायक रवीन्द्र जैन के सहभागी गायक रवि जैन ने अपने द्वारा दिए गए स्वरों के गीतों की सी.डी. भेंट की। प्रेक्षा इन्टरनेशनल का नये प्रारूप में प्रकाशित कैलेण्डर 2010 की प्रथम प्रति ट्रस्टीगण ने समर्पित की।

मर्यादाओं का किया पुनर्रावर्तन

महोत्सव के अन्तर्गत आयोजित वृह्द हाजरी वाचन कार्यक्रम में सभी 405 शिष्य–शिष्याएं दीक्षाक्रम में खड़े होकर आचार्य भिक्षु द्वारा निर्मित मौलिक मर्यादाओं का पुनरावर्तन किया। आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण ने इन मर्यादाओं के संघ के विकास का आधार बताते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु की सुझ–बूझ के कारण ही आज तेरापंथ अखण्ड है। हाजरी के कार्यक्रम साधू–साध्वियों की पक्ति को कैमरों में केद करने की श्रद्धालुओं में हौड़ लगी हुई थी। तेरापंथ के इस समर्पण को देख सब नत मस्तक थे।

साधु साध्वियों का जुलूस रहा आकर्षण का केन्द्र

तेरापंथ के अधिशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ जब साधू साध्वियों एवं समण–समणीगण के जुलूस के साथ मर्यादा समवसरण में पधारे तब एक नया ही नजारा देखने को मिला। जुलूस में सर्व प्रथम समणीगण उसके बाद साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा के पीछे चलता साध्वियों का दल और उसके बाद जैन ध्वज जो पंचरंगों से सजा अन्नत ज्ञान, अन्नत दर्शन, अन्नत आनंद का संदेश दे रहा था। जैन ध्वज के पीछे युवाचार्य महाश्रमण 250 वर्ष प्राचीन आचार्य भिक्षु द्वारा लिखित तेरापंथ का छत्र मर्यादा पत्र थामे मंथर गति से गतिमान थे। उनके पीछे पंक्तिबद्ध चलता साधु समुदाय उसके बाद सबको आशीर्वाद देते हुए मानवता के मसीहा आचार्य महाप्रज्ञ सुशोभित थे। आचार्य के इंगितानुसार चलने वाला श्रावक समाज जयकारों से आकाश को गुंजायमान करते हुए चल रहा था। मार्ग पर चलता ऐसा जुलूस देख छत्तीसों कोम प्रफुल्लित थे। धवलिमामय यह जुलूस मर्यादा और अनुशासन का संदेश दे रहा था।

तुलसीराम चौरड़िया
मीडिया संयोजक